

पी-एच.डी.प्रवेश परीक्षा

विषय — दर्शन शास्त्र एवं योग
पाठ्यक्रम—

(शिक्षा सत्र—2025—26 से मान्य)

अ.

- 1— भारतीय दर्शन की सामान्य विशेषताएं, भारतीय दर्शन में योग का महत्व।
- 2— योग की दार्शनिक पृष्ठभूमि;—सांख्य-दर्शन, सांख्य और योग में संबंध, पुरुष-सिद्धि, बंधन।
- 3— सांख्य-प्रकृति सिद्धि, स्वरूप, विकासवाद एवं कैवल्य।
- 4— गीता में योग के विविध रूप।

ब.

- 1— अनुप्रयुक्त दर्शन-अर्थ, स्वरूप एवं महत्व, दर्शन एवं अनुप्रयुक्त दर्शन में संबंध। योग का अर्थ, परिभाषा, महत्व व उद्देश्य।
- 2— योग का उद्भव एवं विकास, योग में साधक एवं बाधक तत्व।
- 3— योग सूत्र।
- 4— अष्टांग योग तथा कर्म योग, भक्ति योग एवं ज्ञान योग, हठ योग, मंत्र योग, लय योग एवं क्रिया योग।

स.

समकालीन भारतीय दर्शन के प्रमुख विचारक

1. श्री अरविन्द 2. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन 3. रविन्द्रनाथ टैगोर 4. मानवेन्द्रनाथ राय


20.5.2025

द. 1— उपनिषद, बौद्ध, जैन मतानुसार चेतना ।

2— चेतना का स्वरूप, सांख्य—योग एवं मीमांसा एवं अद्वैत वेदांत मत में, आत्मा, ब्रह्म, पुरुष, सिद्धि, पुरुष बहुत्व , श्री अरविंद ।

य.

1— पुरुषार्थ, कर्मफल सिद्धांत, संस्कार एवं पुर्नजन्म ।

2— चित्त, चित्त भूमियां, चित्त वृत्तियां ।

3— पंचक्लेश, दुःख का स्वरूप, चतुर्व्यूहवाद, विवेकख्याति, सप्तधाप्रज्ञा ।

4— स्वास्थ्य की परिभाषा, स्वस्थ पुरुष के लक्षण, रात्रिचर्या —निद्रा एवं ब्रह्मचर्य, ऋतुचर्या ।

र.

1— आहार की परिभाषा, आहार के गुण व कर्म । आहार के घटक द्रव्य : कार्बोज, वसा, प्रोटीन, खनिज पदार्थ, जीवनीय तत्व जल ।

2— आहार की मात्रा व काल, संतुलित आहार । दुग्धाहार, फलाहार, अपक्वाहार, मिताहार उपवास ।

3— शाकाहार व मांसाहार के अवगुण । अंकुरित आहार के लाभ, योगाभ्यासी के लिए निषिद्ध आहार ।

ल. बुद्धिवाद, अनुभाववाद, समीक्षावाद, भौतिकवाद, तार्किक भाववाद

व. 1— गीता में योग की प्रवृत्ति व स्वरूप । योग के भेद—कर्मयोग, भक्ति योग, ज्ञानयोग,

ध्यान योग का स्वरूप । भक्त, कर्मयोगी व ज्ञानयोगी व ज्ञानी तत्व के लक्षण, स्थितप्रज्ञ का तत्व दर्शन ।

2— गीता का निष्काम कर्मयोग, ज्ञान, भक्ति एवं कर्मयोग


20.5.2025